

BGYCT-135

सत्रीय कार्य पुस्तिका

विज्ञान में स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.एस.सी.जी./बी.एस.सी.एम.)

शैलविज्ञान

1 जनवरी 2026 से 31 दिसंबर 2026 तक वैध

सत्रांत परीक्षा के लिए फार्म भरने से पहले सत्रीय कार्य
जमा करना अनिवार्य है।



विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110 068

(2026)

प्रिय विद्यार्थी,

कृपया सत्रीय कार्य से संबंधित अनुभाग स्नातक उपाधि कार्यक्रम की कार्यक्रम दर्शिका में पढ़ें, जो हमने नामांकन के बाद आपको भेजा है। उसमें सत्रीय कार्य से संबंधित जो भाग है, उसे कृपया पढ़ लें। जैसा कि आप जानते हैं सतत मूल्यांकन के लिए 30 प्रतिशत अंक निर्धारित किये गये हैं। इसके लिए आपको इस पाठ्यक्रम का एक सत्रीय कार्य हल करना होगा। यह सत्रीय कार्य इस पुस्तिका में शामिल है और इसमें दो भाग हैं, **Part A** और **Part B**। दोनों भागों के कुल अंक 100 हैं, जिनमें से उत्तीर्ण करने के लिए आपको 35 प्रतिशत अंक की आवश्यकता है।

सत्रीय कार्य से संबंधित निर्देश

इससे पहले कि आप किसी प्रश्न का उत्तर लिखें, निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

1. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ पर सबसे ऊपर निम्नलिखित प्रारूप के आधार पर विवरण लिखें।

नामांकन संख्या :

नाम :

पता :

पाठ्यक्रम संख्या :

पाठ्यक्रम शीर्षक :

सत्रीय कार्य संख्या :

अध्ययन केंद्र :

दिनांक :

कार्य के सही और शीघ्र मूल्यांकन के लिए दिये गये प्रारूप का सही अनुसरण करें।

- अपना उत्तर लिखने के लिए फुलस्कैप कागज़ का इस्तेमाल करें, जो ज़्यादा पतला न हो।
- प्रत्येक कागज़ पर बायें, ऊपर और नीचे 4 से. मी. की जगह छोड़ें।
- आपके उत्तर स्पष्ट, सटीक और अपने शब्दों में होने चाहिए।
- इस सत्रीय कार्य के **Part A** और **Part B** को हल करें, और **Part A** और **Part B** सहित संपूर्ण सत्रीय कार्य को वैध तिथि के भीतर अपने अध्ययन केंद्र में जमा कर दें।
- सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिका नियत तिथि के भीतर आपने अध्ययन केंद्र पर जमा करें। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाओं को स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- हमारा सुझाव है कि आप अपने सत्रीय कार्य की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।
- यह सत्रीय कार्य **1 जनवरी 2026 से लेकर 31 दिसंबर 2026 तक वैध हैं**। यदि आप इस सत्रीय कार्य को दिसंबर 2026 तक जमा करने में विफल रहते हैं तब आपको वर्ष 2027 का सत्रीय कार्य करना होगा और कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों के अनुसार इसे जमा करना होगा।
- सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि

| सत्र | जमा करने की अंतिम तिथि | जमा करने का स्थान |
|------------|------------------------|-------------------|
| जनवरी 2026 | 31 मार्च 2026 | अध्ययन केन्द्र |
| जुलाई 2026 | 30 सितम्बर 2026 | अध्ययन केन्द्र |

कृपया ध्यान दें कि विश्वविद्यालय द्वारा जमा करने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा करने की नियत तिथि के संबंध में अद्यतन जानकारी के लिए कृपया **IGNOU** वेबसाइट देखें।

- आपको अपने द्वारा जमा किए गए सत्रीय कार्य की एक फोटोकॉपी अपने पास रखने की सलाह दी जाती है।
- यदि आप इस सत्रीय कार्य को जमा नहीं करेंगे तो आप इस पाठ्यक्रम का सत्रांत परीक्षा फार्म जमा नहीं कर सकेंगे।

किसी भी पूछताछ के लिए आप कृपया संपर्क करें : kakoligogoi@ignou.ac.in,

meenalmishra@ignou.ac.in।

हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

सत्रीय कार्य शैलविज्ञान

पाठ्यक्रम कोड : BGYCT-135
सत्रीय कार्य कोड : BGYCT-135/TMA/2026
कुल अंक : 100

नोट : * सभी प्रश्न हल करें। प्रत्येक प्रश्न के आगे उसके अंक दर्शाए गए हैं। सभी उत्तर अपने शब्दों में लिखें; पाठ्यक्रम सामग्री से कॉपी न करें।

* 5 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में और 10 अंकों के प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों से अधिक न लिखें।

Part A

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखें :
 - a) SiO_2 प्रणाली की क्रिस्टलीकरण प्रकृति (5)
 - b) आग्नेय शैलों का सारणीय वर्गीकरण (5)
2. आग्नेय शैलों में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के गठनों को स्पष्ट रेखांकित आरेखों की सहायता से समझाइए। (10)
3. मैग्मा के रासायनिक और खनिज संघटनों को विस्तार से व्याख्या कीजिए। (10)
4. स्पष्ट आरेखों की सहायता से रायोलाइट के स्थूल तथा सूक्ष्मदर्शीय लक्षणों की विवेचना कीजिए। (10)
5. स्पष्ट आरेखों की सहायता से गैब्रो के स्थूल तथा सूक्ष्मदर्शीय लक्षणों की विवेचना कीजिए। (10)

Part B

6. कणों के आकार और आकृति के आधार पर अवसादी शैलों के वर्गीकरण पर चर्चा कीजिए। (10)
7. कायांतरित संलक्षणी की अवधारणा को समझाइए। (10)
8. कायांतरण को प्रभावित करने वाले घटकों को व्याख्या करें। (10)
9. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखें :
 - a) कण आकारिकी (5)
 - b) कणों का संकुलन (5)
 - c) प्रादेशिक कायांतरण (5)
 - d) मूलावशेषी गठन (5)